चिचड़ी (टिक)

जोरजिओ अगम्बैन

"जानवर की याददाश्त होती है, पर कोई यादें नहीं।"
– हेमन्न स्टाइनथल (Heymann Steinthal)

ईज़ीक्यूल (Uexküll, एक जर्मन जीवविज्ञानी) की किताबों में कभी-कभी ऐसे चित्र होते हैं जो सुझाते हैं कि यदि कोई साही, मधुमक्खी, मक्खी या कुत्ता मनुष्यों की दुनिया का कोई हिस्सा देखे तो उसे कैसा नज़र आएगा। ये प्रयोग उपयोगी हैं क्योंकि ये देखनेवाले में एक भ्रम भरा एहसास पैदा करते हैं। ऐसा इसलिए कि इन्सान बेहद जानी-पहचानी जगहों को अचानक गैर-इन्सानी आँखों/नज़रिए से देखने पर मजबूर हो जाता है। लेकिन इस भ्रम के एहसास ने कभी वो रूप नहीं पाया जितना ईज़ीक्यूल चिचड़ी यानी टिक *(Ixodes ricinus)* के बारे में लिखते हुए दे पाए, जो बेशक मॉडर्न एंटीह्यूमनिस्म का एक शिखर है और जिसे *उबु रोइ (Ubu roi)* और *मॉन्सियोर टैस्ट (Monsieur Teste)* के बाद पढ़ा जाना चाहिए।

इसकी शुरुआती पंक्तियों में कविता की-सी खनक सुनाई देती है:

"अपने कुत्ते के साथ जंगल-बीहड़ में घूमनेवाले गाँव के हर व्यक्ति की मुलाकात उस छोटे-से कीट से ज़रूर हुई होगी जो किसी झाड़ी से लटके हुए अपने शिकार (मनुष्य या जानवर, कोई भी) के इन्तज़ार में रहता है ताकि उस पर गिरे और उसका खून पी डाले। यह जब अण्डे से निकलता है तो उसका विकास पूरा नहीं हुआ होता है: उसके पास एक जोड़ी टाँगें और जननांग नहीं होते हैं। लेकिन इस अवस्था में भी घास की नोक पर टिककर वह छिपकलियों जैसे शीत-रक्तवाले (वातावरण के साथ तापमान बदलने वाले) जानवरों पर वार करने की क्षमता रखता है। एक के बाद एक होनेवाले कुछ मोल्ट (समय-समय पर अपने बाहरी अंगों को गिराते जाना) के बाद वह उन अंगों को प्राप्त कर लेता है जो अब तक उसके पास नहीं थे। इसके बाद वह गर्म रक्तवाले (स्थिर तापमान वाले) जानवरों की तलाश में निकल सकता है।

समागम के बाद मादा अपनी आठों टाँगों के बल पर झाड़ी से बाहर निकल रही किसी टहनी की नोक तक बढ़ जाती है। इससे वो काफी ऊँचाई पर पहुँच जाती है। यह सब इसलिए ताकि वह वहाँ से गुज़र रहे

छोटे स्तनधारी जानवरों पर गिर सके या फिर बड़े जानवर उससे आ टकराएँ।"

ईज़ीक्यूल ने जो कहा, उसे ध्यान में रखते हुए, चलो एक चिचड़ी की कल्पना करते हैं। गर्मियों का एक सुहावना दिन है। और एक चिचड़ी अपनी झाड़ी में लटकी है। सूरज की रोशनी में डूबी और जंगली फूलों के रंगों और खुशबुओं से घिरी। मधुमक्खियों और अन्य कीटों की गूँजों और पक्षियों के गानों से घिरी चिचड़ी। लेकिन काव्यात्मकता तो यहीं पर खत्म हो जाती है, क्योंकि चिचड़ी इन सब चीज़ों को बिलकुल महसूस नहीं करती है।

बिना आँखोंवाले इस जीव की त्वचा रोशनी के प्रति संवेदनशील होती है। और सिर्फ इसी के सहारे वह अपनी चौकी (मंज़िल) तक पहुँच पाती है और अपने शिकार के आने का इन्तज़ार करने लगती है। इस अन्धे और बहरे डाकू को उसके शिकार के आने की खबर, उसकी सूँघने की शक्ति से मिलती है। ब्यूटिरिक ऐसिड की महक सभी स्तनधारी जानवरों की चमड़ी में स्थित वसा ग्रन्थियों (सैबेशियस ग्लैंड्स) से निकलती है। यह चिचड़ी के लिए संकेत का काम करती है। महक के आते ही बिना आगा-पीछा देखे, वो अपनी चौकी से अपने शिकार पर गिर पड़ती है। अगर खुशकिस्मती से वह किसी गर्म चीज़ पर गिरती है तो समझो उसने अपना गर्म रक्तवाला शिकार पा लिया है। (गौरतलब है कि गर्म चीज़ का पता उसे अपने एक ऐसे अंग का इस्तेमाल करने से चलता है जो एक खास तापमान के प्रति संवेदी है।) इसके बाद, कम-से-कम बालोंवाली जगह तक पहुँचने के लिए और सिर को पूरी तरह शिकार की चमड़ी में धँसाने के लिए उसे ज़रूरत सिर्फ स्पर्श की होती है। अब वह आहिस्ता-आहिस्ता गर्म खून को चूस सकती है।

यहाँ, कोई भी इस बात की अपेक्षा कर सकता है कि चिचड़ी को खून का स्वाद बेहद पसन्द है, या फिर कम-से-कम उसके पास खून के फ्लेवर को पहचानने के लिए कोई इन्द्रिय तो होगी ही। लेकिन ऐसा नहीं है। ईज़िक्यूल बताते हैं कि तरह-तरह के द्रव्य से भरी कृत्रिम झिल्लियों को लेकर प्रयोगशालाओं में किए गए प्रयोगों ने दिखाया है कि चिचड़ी में स्वाद की इन्द्रिय का पूरी तरह से अभाव है। सही तापमान (37 डिग्री सैल्सियस - जो स्तनधारी जानवरों के खून के तापमान के समान है) के किसी भी द्रव्य को वह फुर्ती-से पीती है। जो भी हो, चिचड़ी की खून की यह दावत उसकी आखिरी दावत भी होती है। क्योंकि अब उसके पास करने के लिए कुछ नहीं बचा होता सिवाय ज़मीन पर गिरकर अण्डे देने और फिर मर जाने के।

चिचड़ी के उदाहरण से साफ है

चित्र-1: घास की पत्ती की नोक पर बैठ अपने शिकार का इन्तज़ार करती चिचड़ी।

कि सभी जीवों के लिए जिस तरह का वातावरण महत्वपूर्ण है, उसका सामान्य ढाँचा क्या है। इस खास मामले में, जानवर की जो आत्मकेन्द्रित दुनिया है वह मात्र तीन महत्वपूर्ण बिन्दुओं में बतलाई जा सकती है –

1. ब्यूटिरिक ऐसिड की महक जो सभी स्तनधारी जानवरों के पसीने में होती है।
2. 37 डिग्री सैल्सियस का तापमान जो स्तनधारियों के खून के तापमान के अनुरूप है।
3. स्तनधारियों की चमड़ी के विशेष गुण (आम तौर पर इस पर बालों की मौजूदगी और रक्त-धमनियों की आपूर्ति)।

इसके बावजूद चिचड़ी एकदम से इन तीनों के साथ गर्मजोशी से जुड़ जाती है। ऐसा सब तो मनुष्य और उसकी समृद्ध दुनिया के बीच के रिश्तों में भी नहीं दिखलाई देता। चिचड़ी तो असल में यह रिश्ता भर ही है – वह सिर्फ इसमें और इसके लिए जीती है।

हालाँकि, यहाँ ईज़ीक्यूल हमें बताते हैं कि एक प्रयोगशाला में एक चिचड़ी को 18 साल के लिए बिना किसी खानपान के ज़िन्दा रखा गया। यानी अपने पर्यावरण से बिलकुल अलग स्थिति में। वे इस अजीब बात का कोई ब्यौरा नहीं देते हैं। और अपने आप को सिर्फ इस बात तक सीमित रखते हैं कि इस "इन्तज़ार के

समय में" चिचड़ी एक "नींद जैसी स्थिति में पड़ी रहती है - जैसे हम हर रात अनुभव करते हैं।" फिर वे कहते हैं कि "बिना जीवित नमूने के, समय का कोई अस्तित्व नहीं।" लेकिन 18 साल लम्बी इस निलम्बन की हालत में चिचड़ी और उसकी दुनिया का क्या हुआ? और चिचड़ी तो पूरी तरह से पर्यावरण के साथ अपने रिश्ते की बिनाह पर ही ज़िन्दा रहती है। तो वह उसके बिना ज़िन्दा कैसे रह पाई? और समय के बगैर, संसार के बगैर 'इन्तज़ार' का क्या अर्थ हुआ?

जोरजिओ अगम्बैन: इताल्वी दार्शनिक हैं जो अपवाद की स्थिति, फॉर्म-ऑफ-लाइफ व होमो सेकर जैसे विषयों पर काम करने के लिए जाने जाते हैं। बीते कुछ वर्षों में, उनके कार्य का समकालीन एंग्लो-अमरीकी बुद्धिजीवी जगत के कई अध्ययन-विषयों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। साथ ही, कई विश्वविद्यालयों में अध्यापन का कार्य भी करते रहे हैं।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: विनता विश्वनाथन: *चकमक* पत्रिका से सम्बद्ध हैं।

इस अनुवादित लेख को *चकमक* पत्रिका के अंक-जून, 2014 से लिया गया है।

यह लेख *द ओपन - मैन एण्ड एनीमल* किताब के एक निबन्ध का सम्पादित अंश है।